NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 3, ISSUE 12, Dec. -2017

Anju Rani

Assistant Professor of Geography

Govt. College for Women, Narnaul, Mahender Garh

झुंझुनूँ जिले में जल संसाधन की गंभीर समस्या

Abstract

झुन्झुनूँ जिले के लिए जल आज एक गंभीर समस्या है। आज संपूर्ण झुन्झुनूँ जिले का जल स्तर काफी नीचे चला जा रहा है जो कि एक गंभीर समस्या है तथा आने वाले समय के लिए एक अच्छा संकेत नहीं है। जल के लगातार गिरते स्तर के कारण झुन्झुनूँ जिले में कृषि की पैदावार में गिरावट आ रही है। आज जल की कमी के कारण किसान अपना कृषि कार्य छोड़कर किसी दूसरे रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ जा रहे हैं।

Introduction

झुन्झुनूँ में आठ जोन हैं जिसमें की एक मात्र जोन अलसीसर को छोड़कर सभी को डार्क जोन में शामिल किया गया है।

आठ जोन इस प्रकार हैं –

(1) झुन्झुनूँ (2) उदयपुरवाटी (3) नवलगढ़ (4) खेतड़ी

(5) बुहाना (6) अलसीसर (7) सूरजगढ़ (8) पिलानी

दूसरा यहाँ के लोगों ने अत्याधुनिक मशीनों के द्वारा पृथ्वी के काफी गहरे तक से पानी का दोहन कर जलस्तर को गिरा दिया है। अगर हम देखें तो लगता है कि ट्यूबवैलों के द्वारा धरती के हृदय पर घाव हो गये हैं।

आज जब क्षेत्र को डार्क जोन घोषित करने के बाद भी क्षेत्र में ट्यूबवैल लगवाये जा रहे हैं इसका कारण विभाग के अधिकारी अपने स्वार्थ के कारण रात के अंधेरे में ऐसे कार्य करवाते हैं।

जिले में डार्क जोन क्षेत्र

1. नवलगढ़ जोनः

झुन्झुनूँ जिले से 50 किमी की दूरी पर स्थित है। यह ऐतिहासिक व पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ शीत ऋतु में प्राचीन हवेलियों को देखने विदेशी पर्यटक आते हैं।

पहले इस क्षेत्र में पानी की कोई कमी नहीं थी पर यह क्षेत्र आज पानी की समस्या से जूझ रहा है। यहाँ प्राचीन कुऐं व बावड़ियों में पानी सूख चुका है जिसकी वजह से यहाँ कृषि कार्य में बड़ी मात्रा में कमी महसूस की गई है।

यहाँ के कुछ गाँव तो पानी की समस्या से बुरी तरह त्रस्त हैं। यहाँ का जलस्तर 140 से 150 मीटर के आसपास है। जैसे – चिराणा, टोडपुरा, बसावा, झाझड़, टोंक टीलरी, गोल्याणा, बाणी, बारवा, खिरोड, कारी, बेरी आदि गाँव तो पीने के पानी के लिए बड़ी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।

कुछ गाँव ऐसे हैं जहां पानी का स्तर अब तक तो ठीक है पर लगातार हो रही गिरावट का असर आने वाले कुछ वर्षों में देखने को मिल सकता है जैसे नवलगढ़ शहर, जाखल, परशरामपुरा, इन्द्रपुरा, बिरोल, टोडी, दुडीयां आदि गाँव।

2. खेतड़ी जोन :

इस जोन में पानी की समस्या एक गम्भीर रूप ले चुकी है। इस क्षेत्र का जल स्तर लगातार गिरता जा रहा है जो कि एक गंभीर चिन्ता का

विषय है। यहाँ हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड का उपक्रम है जिसके लिए पानी की प्राप्ति भी एक समस्या है तथा पानी का प्रदूषण भी एक समस्या बना हुआ है।

यहाँ का जलस्तर 120 मीटर के आसपास है। यहाँ सिंचाई के लिए पानी की समस्या लगातार बनी रहती है जिसके कारण यहाँ कषि कार्य बहुत कम पैमाने पर किया जाता है। यहाँ के जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण यहाँ के लोगों पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

3. झुन्झुनूँ जोनः

झुन्झुनूँ शहर भी डार्क जोन में शामिल है।यहाँ भी पानी का जल स्तर काफी गहरा है तथा लगातार गिरता जा रहा है। यहाँ प्राचीन जलाशयों, कुओं, बावड़ियों की अधिक संख्या होने के बाद भी यहाँ जल संरक्षण का कोई अनुचित प्रबन्ध नहीं है। वर्षा के दिनों में पानी रास्तों में भर जाता है पर थोड़े समय के बाद ही पानी की गंभीर समस्या बन जाती है। यहाँ का जलस्तर कुछ गाँवों में तो ऊपर है और कुछ गाँवों में काफी नीचे जा चुका है। उदावास, पंचदेव, बड़ागाँव,

झुन्झुनूँ शहर, बजावा, चारावास आदि गाँवों में तो पानी का स्तर 110 मीटर तक है पर कुछ गाँवों में पानी का स्तर काफी नीचे जा चुका है जहां पानी के लेवल 130 मीटर के आसपास है जैसे चनाणा, खोजास, जोधपुरा, हरिपुरा आदि।

जल में फ्लोराइड की मात्रा 6.5 pH के आसपास है। क्षेत्र में गर्मियों में पानी की गंभीर समस्या बन जाती है।

यहाँ जलदायक विभाग का जिला मुख्या होने के कारण यहाँ जलदायक विभाग के उच्च अधिकारी बैठते हैं तथा संपूर्ण जिले की पीने की समस्याओं को सुलझाते हैं।

यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटकों को यहाँ आने वाली समस्याओं के कारण इनकी संख्या में कमी होती जा रही है।

यहाँ हैण्डपम्पों की संख्या विभाग के अनुसार 3000 से ऊपर ही है, ट्यूबवैलों की संख्या 2000 के आसपास है। झुन्झुनूँ में नहर लाने के प्रयास पिछले 50 वर्षों से किये जा रहे हैं। अगर इस क्षेत्र में नहर का पानी आ जाता है तो इस क्षेत्र की कायापलट हो जायेगी।

4. बुहाना जोनः

इस क्षेत्र को भी डार्क जोन में शामिल किया गया है। बुहाना झुन्झुनूँ से 45 किमी की दूरी पर है। यहाँ भी पानी का जलस्तर लगातार गिर रहा है। यहाँ फ्लोराइड की मात्रा 5 pH से ऊपर ही है। बुहाना गाँव की ढाणियों में पानी की गंभीर समस्या बनी हुई है। किसानों के द्वारा अपनी भूमि को छोड़कर जाना तथा दूसरे गाँव में ठेके पर खेती करना मजबूरी हो गया है। यहाँ के कुछ क्षेत्रों में तो जल का स्तर 160 से 165 मीटर के आसपास है तथा कुछ क्षेत्रों में 120 से 130 मीटर के आसपास है। जैसे घसेड़ा, छऊ, मेड़तिया, नोहरा, जमात आदि गाँव है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ पानी की समस्या बड़ी विकट हो जाती है जहां पानी का वितरण टैंकरों के द्वारा किया जाता है।

लोगों ने पानी के संरक्षण के लिए वाटर टैंक बनाये हैं जहां वर्षा का पानी संरक्षित किया जाता है।

5. चिड़ावा जोन :

यह भी एक डार्क जोन क्षेत्र है। चिड़ावा एक ऐतिहासिक शहर है। यहाँ नरहड़ में लगने वाला उर्स अपने आप में अनोखा है। इस क्षेत्र में प्रति

वर्ष हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक आते हैं। इस क्षेत्र में आज पानी की गंभीर समस्या छाई हुई है। पानी का स्तर लगातार गिरता जा रहा है जो कि एक चिन्ता का विषय है। कृषि कार्य पानी की कमी के कारण लगभग पूरे क्षेत्र में न के बराबर होता है। क्षेत्र में प्राचीन पानी के स्रोत अब सूख चुके हैं तथा आधुनिक युग में इनकी उपयोगिता को धत्ता बता दिया गया है जो कि एक चिन्ता का विषय है।

चिड़ावा क्षेत्र में पानी की सप्लाई दूर से की जाती है तथा गाँवों के लोग पानी दूर दूर से लेकर आते हैं।

जल में फ्लोराइड की मात्रा है जिसका असर लोगों पर देखा जाता है। पानी के लिए लड़ाई, झगड़े होना आम बात है तथा धरने प्रदर्शन, अधिकारियों से बदसलूकी की घटनाऐं आम बात हो गई हैं।

खेतीहर किसान कृषि कार्य छोड़कर दूसरे रोजगार को अपनाने लगे हैं जिसके कारण वर्ष में केवल एक फसल सिर्फ बाजरा ही पैदा की जाती है जिसके कारण कृषि पैदावार में काफी गिरावट आयी है।

यहाँ के हैण्डपम्पों व ट्यूबवैलों का पानी भी गर्मियों में सूख जाता है। इस क्षेत्र में पानी की समस्या के लिए घर घर में वाटर टैंक

बनाये गये हैं वे गाँव हैं गुढ़ा, बालास, धनावता, नांगल, कोट, बागोरा, पोषाणा, गुडा, किशोरपुरा, कांकरिया, चौफुल्यसा, दीपपुरा आदि गाँव हैं।

इस क्षेत्र में कुओं व हैंडपंपों के द्वारा पानी का उपयोग किया जाता है तथा सिंचाई के लिए अब तक तो पानी पर्याप्त है। इस क्षेत्र में 2500 के लगभग हैण्डपंप हैं तथा 700 के आसपास ट्यूबवैल हैं। कुओं की संख्या पहले तेजी से बढ़ रही थी पर अब इसकी संख्या में कमी आ रही है।

जल में फ्लोराइड की मात्रा 6 pH के बराबर हैं। यहाँ के लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने के कारण फ्लोराइड का शिकार हो रहे हैं। सरकार ने फ्लोराइड के उपचार के लिए पानी में मिलाने वाली कुछ दवाईयां पिछले दिनों वितरित की हैं।

उदयपुरवाटी क्षेत्र

यह क्षेत्र झुन्झुनूँ से 50 किमी व सीकर से 40 किमी की दूरी पर है।

इस क्षेत्र को भी डार्क जोन में शामिल किया गया है। इस क्षेत्र का भी जलस्तर लगातार गिरता जा रहा है। जिसके कारण यहाँ पीने के पानी की गंभीर समस्या बनती जा रही है। इस क्षेत्र का जलस्तर 160 मीटर के लगभग है जो कि लगातार गिरता जा रहा है।

यहाँ कुछ गाँव ऐसे भी हैं जहां का जलस्तर 200 मीटर के आसपास पहुँच गया है जैसे छापौली, मंडावरा, घाट, गिरावडी, नीम का जोहड़ा, मणकसास, पचलंगी, पापड़ा, अढ़वाना, आदि गाँव पानी की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं।

ऐसे गाँव जिनका जलस्तर अब तक तो यानी 120 मीटर के आसपास है।

सूरजगढ़ क्षेत्रः

इस क्षेत्र में पानी की गंभीर समस्या लगातार बनी रहती है। यहाँ गाँवों व ढाणियों में लोग पानी के लिए रात रात भर हैण्डपम्परों व कुओं पर कतार में बैठे रहते हैं। विभाग के द्वारा आपातकालीन सुविधाओं के लिए टैंकरों से जल का वितरण किया जाता है। यहाँ भी

कृषि कार्य लगातार कम होता जा रहा है। किसान अपना कृषि कार्य छोड़कर दूसरा कार्य अपना रहे हैं।

फ्लोराइड की मात्रा 6pH के लगभग है। यहाँ प्राचीन जल के स्रोतों की उचित रूप में देखभाल नहीं की गई जिसके कारण इन स्रोतों की दयनीय दशा हो गई है। वर्षा के जल संरक्षण के लिए घर घर में वाटर टैंक बनाये गयें हैं। जब कभी अच्छी वर्षा हो जाती है तो वर्षा का स्तर थोड़ा बहुत सुधर जाता है पर कभी–कभी वर्षा न होने की दशा में यहाँ पानी की समस्या बहुत ही विकट हो जाती है। कुछ गाँव व ढाणियों का जल का स्तर 140 से 160 मीटर तक पहुँच गया है जैसे देवगढ़, रामपुरा, रंगपुरा, सांकड़ा आदि गाँव हैं। कुछ गाँवों का जल स्तर 110 से 120 मीटर तक पहुँच गया है। जैसे कि लालपुर, रघुपुरा, पाटनी, लाडपुरा आदि।

References

1. टॉड ने (1919): एनाल्स एण्ड एक्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान, वॉल्यूम–1, जार्ज रोटलेन एण्ड संस, लंदन।
2. बेकर ओ.ई. (1929): द इनक्रिजिंग इम्पार्टेन्श ऑफ फीजिकल कडींशनस इन डिटरमाइनिंग द युटीलाइजेशन ऑफ लैण्ड फॉर एग्रीकल्चर एण्ड फारेस्ट प्रोडेक्शन इन द यू.एल. एनालस् एसोसियशन, ए .एम. जार्जस वोल्यूम –2 पेज नं. 17–46
3. राय,एस.सी (1997) : द खरिया रांची : मैन इन इण्डिया ऑफिस, नई दिल्ली, पृ.10
4. हाबल, ई.ए. (1958): मैन एनप्रिमेटिव वर्ल्ड, मैक ग्रा–हिल, न्यूयार्क, पृ. 166
5. दवे, पी.सी. (1960):दी गरासिया, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, दिल्ली।
6. सफी एम (1960):लैण्ड यूटीलाइजेशन इन इस्टर्न उत्तर प्रदेश यूनिवर्सिटी, अलीगढ़
7. इपस्टेन, टी.एस. (1964): इकोनोमिक डवलपमेंट एवं सोशल चैन्ज इन साउथ इण्डिया, मानचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रैस, यू.एस.एस.
8. दयाल एम (1968):द चेनजिंग पैटनर्स ऑफ इंडिया इंटरनेशनल ट्रेडस, इकोनोमिक ज्योग्राफी वोल्यूम 44, पृष्ठ संख्या 240 – 269, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर और दिल्ली।
9. मुरदिया बी.एस. (1968):राजस्थान में ग्रामीण विद्युतीकरण, पीएच.डी. थिसिस, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
10. जोशी, य.गो (1972): '' भारत का वृहत भूगोल'' मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली।